www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शान्ति कुंज-एक परिचय

श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN

SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शान्ति कुञ्ज–एक परिचय

संसार में दो प्रचण्ड शक्तियाँ हैं एक, धर्म दूसरा शासन। धर्म उत्कृष्ट चिन्तन, आदर्श चरित्र और उदार व्यवहार की शिक्षा देता है। व्यक्ति को ऐसे ढाँचे में ढालता है जिससे वह समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी से भरा पूरा जीवन जी सके। एकता और समता की भावनाओं से भरा पूरा रह सके। धर्म का तत्व ज्ञान यही है। उसका तत्वदर्शन व्यक्ति की चेतना को मानवी गरिमा के अनुरूप ढालता है।

शासन का काम समाज व्यवस्था बनाना, जनता की समृद्धि और सुविधा बनाना, अनाचारों पर नियंत्रण करना, देश की सुरक्षा का प्रबंध करना जैसे कार्यों का उत्तरदायित्व उठाना है। शिक्षा, चिकित्सा, संचार, परिवहन, उत्खनन जैसे अनेकों उपयोगी कार्य शासन ही योजनाबद्ध रूप से करता है।

धर्म और शासन के बीच अन्योन्याश्रित जैसा सम्बंध रहना चाहिए। यों दोनों के कार्य क्षेत्र अलग-अलग हैं, पर दोनों को मिला देने से ही एक समग्र प्रगतिशीलता बनती है। व्यक्ति को मानवी गरिमा के अनुरूप धर्म ढाले और समाज को सुव्यवस्थित रखने का काम शासन करे। शासन मानवी तत्व-दर्शन को प्रभावित नहीं कर सकता और धर्म में व्यवस्था बनाने के लिए जो दंडात्मक बहिरंगीय अनुशासन शक्ति चाहिए वह नहीं है। इसीलिए भूत काल में दोनों ही क्षेत्र मिल-जुल कर ऐसे कार्यक्रम बनाते और बाँटते थे, जिससे समाज की समग्र प्रगति एवं सुख शान्ति में सहायता मिले।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आज दोनों ही क्षेत्रों में अवांछनीयताओं की घुस पैठ हो गई है । धर्म में वे बुराइयाँ प्रतिगामिताएँ इसलिए अधिक दीखती हैं कि उस क्षेत्र से आदर्शों के उद्भव की बड़ी-बड़ी आशायें की जाती हैं। पर जब वहाँ भी ढोंग, पाखण्ड, विलगाव, ठगी, प्रतिगामिता का सम्मिश्रण दीखता है तो लोग खीजते और कटु समीक्षा करते हैं। यह सही भी है । उस क्षेत्र को धर्म की मूल आस्थाओं को प्रचलित करने में ही संलग्न रहना चाहिए। उसका ऐसा रूप न बनने देना चाहिए जिससे परस्पर कलह बढ़े और कुरीतियों के प्रचलन में सहायता मिले। शासन में भी बुराइयाँ कम नहीं हैं। सुधार उस क्षेत्र का भी होना चाहिए।

इन गई गुजरी परिस्थितियों में भी धर्म का असाधारण प्रभाव जनता पर बना हुआ है । उसके आवरण को खड़ा रखने में लोगों का कितना समय श्रम और धन खर्च होता है इसका हिसाब लगाने पर प्रतीत होता है कि धर्म में पाखण्ड घुस पड़ने पर भी उसके प्रति लोगों में गहरी आस्था अभी भी विद्यमान है। धर्म कलेवर के निमित्त जो किया जाता है वह उससे थोड़ा ही कम हो सकता है जितना कि शासन को अपना ढाँचा खड़ा रखने में जुटाना पड़ता है।

प्रज्ञा मिशन (युग निर्माण योजना) का कार्य क्षेत्र शासन नहीं, समाज परिकर है जो धर्म धारणा से अनुप्राणित है । इसलिए उसने कार्य क्षेत्र में उन तत्वों का समावेश किया है जिससे उसमें घुसी हुई प्रतिगामिता को जहाँ तक संभव हो, हटाने घटाने, के लिए प्राण पण से प्रयत्न किया जाय और उसके साथ वे क्रिया-कलाप जोड़े जाँय जो व्यक्ति और समाज को समुन्नत और सुसंस्कृत बनाने हेतु योगदान दे सकें ।

चूँकि आरम्भकर्ता हिन्दू समाज में जन्मे हैं और उनका परिचय, प्रभाव क्षेत्र भी उसी वर्ग में अधिक रहा है, इसलिए कार्य वहाँ से आरम्भ किया है, पर योजना यह है कि अन्यान्य धर्मों में भी यही सत्प्रवृत्ति संवर्धन का कार्य उन्हीं के अनुशासनों के अन्तर्गत रह कर किया जाय। सभी धर्मों के बीच एकता, सहिष्णुता, सद्भावना और प्रगतिशीलता का समावेश करके उन्हें एक ही केन्द्र पर लाकर विश्व धर्म या मानव के रूप में विकसित किया जाय।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिशन का कार्य किस प्रकार चला ? कहाँ तक पहुँचा ? और उसके क्या परिणाम सामने आए ? इसके अब तक के कार्य विवरण को जानने से ही वह जाना जा सकेगा कि नव सृजन में उसकी कितनी बड़ी भूमिका होने की संभावना है ।

प्रज्ञा मिशन का सूत्र संचालक इन पंक्तियों का लेखक सन् १९३० से सन् १९४५ तक स्वतंत्रता संग्राम में पूर्ण समय दानी कार्यकर्ता के रूप में कांग्रेस में काम करता रहा । कई बार जेल भी जाना हुआ । इस बीच में धर्म के तत्व ज्ञान को अधिकाधिक गंभीरता से समझने में अपना, जितना संभव था उतना समय लगाया । आन्दोलन समाप्त होते ही धर्मतंत्र से लोक शिक्षण का कार्य करने में जुटा । इसके साथ ही गायत्री मंत्र की ऐसी कठोर साधना की, जो प्रस्तुत विशाल कार्य में सफलता देने के लिए आधार बन सकी । उस साधना की पूर्णाहुति सन् १९५८ में विशाल गायत्री यज्ञ के रूप में हुई । उसमें देश के प्रगतिशील विचार-धारा वाले धार्मिक व्यक्तियों को बुलाया गया । इनमें से प्रायः एक लाख ऐसे छाँटे गए जो अपने-अपने क्षेत्रों मे धर्म के माध्यम से समाज में नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक क्रान्ति की योजना को कार्यान्वित करने में न्यूनतम एक घटे का समय और दस पैसा नित्य लगाते रहें । सबको कार्य क्षेत्र बाँट दिए गए । कार्य क्रम बना दिए गए और आवश्यक खर्च के लिए सम्पर्क क्षेत्र के प्रेमियों द्वारा दी जाने वाली १० पैसा प्रतिदिन की राशि से काम चलाने को कहा गया । आरम्भ यहीं से होता है ।

सर्व साधारण को यह समझाने के लिए कि धर्म का तत्वज्ञान पूजा पाठ तक सीमित नहीं है वरन् उसके साथ आत्मनिर्माण और लोक मंगल का प्रयास भी अविच्छिन्न रूप से जुड़ा हुआ है । यह दार्शनिक परिवर्तन था । इसके लिए हिन्दू धर्म के वेद, पुराण, दर्शन, उपनिषद्, स्मृतियाँ आदि सभी प्रमुख ग्रंथों का अनुवाद और प्रकाशन किया गया । इस अनुवाद ने लोगों की मान्यताओं में क्रान्तिकारी परिवर्तन किया और उन्हें मात्र पूजारत रहने की अपेक्षा लोक सेवी बना दिया । वर्तमान परिस्थितियों में धर्म मंच से व्यक्ति, परिवार या समाज को सुधारने के लिए किस प्रकार क्या किया जा सकता है इसका मार्गदर्शन करने के लिए कई भाषाओं की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मासिक पत्रिकाएँ निकलती हैं। इनमें अखण्ड ज्योति, युग निर्माण योजना दो हिन्दी की तथा युग शक्ति गुजराती एवं उड़िया की अभी भी प्रकाशित हो रही हैं। इन चारों की ग्राहक संख्या तीन लाख के लगभग है। अभी बंगला, मराठी पंजाबी और अँग्रेजी की पत्रिकाएँ कुछ समय के लिये बन्द कर दी गई हैं। उनको जल्दी ही पुनः प्रकाशित करने का विचार है।

समय के अनुरूप धर्म तंत्र को किस प्रकार बदलना चाहिए और अपनी शक्तियों को किन प्रगतिशील प्रयोजनों के लिए लगाया जाना चाहिए इस संदर्भ में स्वयं लिखने और स्वयम् प्रकाशित करने का काम आरंभ किया। सन् १९४७ से सन् १९७१ तक गतिविधियों का केन्द्र मथुरा रहा। गायत्री तपोभूमि और युग निर्माण योजना की दो भव्य इमारतें बनी और प्रकाशन एवं प्रशिक्षण का दुहरा काम एक साथ चल पड़ा।

हर महीने १०० कार्यकर्ताओं का एक मास वाला प्रशिक्षण चलता रहा। साथ ही अत्यन्त सस्ता और प्रेरक साहित्य छपता रहा। छोटी बड़ी लगभग ५०० पुस्तकें छपीं और इनके भारत की अन्य भाषाओं में भी अनुवाद हुए। इस साहित्य को जनता तक पहुँचाने के लिए कार्यकर्ताओं ने झोला पुस्तकालय चलाये और धकेल गाड़ियों के रूप में ज्ञान रथ चलाये। पुस्तक पढ़ाने और वापिस लेने की प्रमुख योजना थी। जो पसंद करें वे खरीद भी लें ऐसा प्रबंध चल पड़ा। इससे विचार क्रान्ति में भारी योगदान मिला। जहाँ तहाँ क्षेत्रीय बड़े आयोजन भी गायत्री यज्ञ एवं युग निर्माण योजना के नाम से होते रहे जिनमें उपस्थित सभी धर्म सम्प्रदाय के लोगों ने व्यक्तिगत बुराइयों और सामाजिक कुरीतियों का संकल्प पूर्वक परित्याग किया और प्रण को निभाया।

मथुरा में प्रेस प्रकाशन, कार्यकर्ताओं के किशोर बालकों को स्वावलम्बन एवं चरित्र निर्माण के लिए सफल विद्यालय चलाने का काम इतना अधिक बढ़ गया कि कार्यकर्ताओं के साथ विचार विनिमय एवं प्रशिक्षण के लिए अतिरिक्त स्थान की आवश्यकता पड़ी। कुछ कार्य बढ़ाने भी थे। अस्तु सन् १९७०-७१ में हरिद्वार गंगा तट पर शान्ति कुञ्ज गायत्री तीर्थ और १९७८ ई० में ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान दो आश्रमों की स्थापना की गई।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शान्ति कुञ्ज, ब्रह्मवर्चस् मे ढाई सौ से अधिक परिवार रहते हैं। इनमें से अधिकांश अपनी संचित पूँजी के बल पर गुजारा करते हैं। शेष में भोजन वस्त्र जितना निर्वाह लेकर स्वेच्छा सेवा के रूप में निरन्तर कार्यरत रहने का भारी उत्साह है।

शान्ति कुञ्ज में एक-एक महीने के युग शिल्पी सत्र चलते हैं और तीर्थ यात्रियों के लिए पाँच-पाँच दिन के भी। एक महीने वालों में सुगम संगीत, कथा-प्रवचन, भाषण तथा अन्य रचनात्मक कार्यों की व्यवहारिक कार्य पद्धति सिखाई जाती है। मिशन का प्रकाशित प्रज्ञा पुराण चार खण्डों में छप चुका है। इनमें प्राय: ४ हजार पुरातन कथाएँ ऐसी हैं जो प्रगतिशीलता की ओर ले जाती हैं और आज की समस्याओं का समाधान सुझाती हैं।

पाँच दिन वाले शिविरों में व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण के लिए कौन किस प्रकार कहाँ किस तरह क्या कर सकता है? उसका हर व्यक्ति को उसकी परिस्थिति के अनुसार परामर्श दिया जाता है।

जो कार्य हाथ में लिए गए हैं उनमें से कुछ निर्णयात्मक हैं कुछ सुधारात्मक। इन्हें इस प्रकार समझा जा सकता है।

(१) शिक्षा स वर्धन, प्रौढ़ शिक्षा के लिये पुरुषों की रात्रि पाठशालायें तथा महिलाओं के लिए तीसरे पहर की पाठशाला चलाना, इसका समुचित शिक्षण।

(२) गाँव-गाँव स्वास्थ्य केन्द्र खोलना, जिसमें खेल कूद व्यायाम के अतिरिक्त आहार विहार के नियम भी समझाए जाँय।

(३) वृक्षारोपण, घरों में शाकवाटिका, जड़ी बूटी, उत्पादन, घरेलू उपचार का सामान्य शिक्षण।

(४) "खर्चीली शादियाँ हमें दरिद्र और बेइमान बनाती हैं" इस तथ्य से जन-जन को अवगत कराना और बिना दहेज की नितान्त सादगी वाली शादियाँ करना।

(५) नशेबाजी का भरसक विरोध। इस लत से लोगों को छुड़ाना। उन्हे संकल्प से बाँधना।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(६) गाँव-गाँव श्रमदानी स्वयं सेवक तैयार करना उन्हें गाँव को साफ सुथरा रखने के लिए स्वच्छता अभियान में लगाना ।

(७) अल्प बचत योजना के आधार पर कुछ भविष्य निधि जमा करते जाने का शिक्षण ।

(८) सहकारिता के आधार पर गृह उद्योगों को बढ़ाने की व्यवस्था बनाना ।

(९) परिवार नियोजन के सरकारी कार्य में सहायता देना । दो से अधिक बच्चे न पैदा करने के लिए हर दम्पत्ति को समझाना ।

(१०) जाति पाँति के आधार पर चलने वाली ऊँच नीच भावना को हटाना ।

यह दस कार्य अपने-अपने क्षेत्र में सुविस्तृत करने के लिए २४०० स्थानों में प्रज्ञा संस्थान के नाम से निजी मकान बनाये गये हैं । उनमें साप्ताहिक विचार गोष्ठियाँ होती हैं और समयदानी कार्यकर्ताओं का निवास रहता है । सद्बुद्धि की देवी महाप्रज्ञा गायत्री की पूजा उपासना भी इन संस्थानों में होती है । नियमित रूप से समय देने वाले समयदानियों को प्रज्ञापुत्र कहा जाता है । केन्द्र का– प्रज्ञापीठों का– कार्यकर्ताओं का निर्वाह खर्च एक मुट्ठी अनाज अथवा दस पैसा नित्य के अंशदान से ही चल जाता है । इन कार्यों के लिए चन्दा उगाहने किसी के पास नहीं जाना पड़ता ।

शान्ति कुञ्ज के प्रज्ञा परिजनों ने स्वयं अपने-अपने क्षेत्र में व्यवस्था करके २५ गाड़ियाँ प्रचार प्रयोजन के लिए दी हैं । वे सदा क्षेत्रों में रहती हैं । पाँच प्रचारक वक्ता गायक हर जीप में भेजे जाते हैं । लाउड स्पीकर, फोल्डिंग व्याख्यान मंच, वाद्य यंत्र, बिस्तर लाद कर जीपें चलती हैं और निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार निरन्तर प्रचार करती रहती हैं । प्रचारकों को भोजन और गाड़ी को पेट्रोल वहाँ से मिल जाता है जहाँ गाड़ियाँ जाती हैं ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उत्तर, मध्य एवं पश्चिमी भारत का अधिकांश भाग मिशन के कार्य में सम्मिलित हो गया है । गाँव-गाँव एक दो प्रज्ञा पुत्र स्वयं सेवक हैं । वे समय निकालते रहते हैं । टेपरिकार्डरों, स्लाइड प्रोजेक्टरों के माध्यम से घर-घर मिशन का संदेश सुनाने और युग के अनुरूप अपने को ढालने बदलने की प्रेरणा देते हैं ।

प्रवासी भारतीयों को भी भारतीय संस्कृति के सम्पर्क में रखने के लिए प्रयत्न चलता रहता है । उनके लिए संदेशों का वीडियो टैप बना दिया जाता है ।

देश भर में फैले कार्यकर्ता अपनी समस्याओं के सम्बंध में परामर्श माँगते रहते हैं उनके लिए एक पत्राचार विद्यालय भी चलता है । शान्ति कुञ्ज में एक सरकारी डाकखाना भी है ।

शान्ति कुञ्ज का अपना एक निराला जड़ी बूटी उद्यान है और उनका रासायनिक विश्लेषण करने की आधुनिकतम प्रयोगशाला है । निःशुल्क चिकित्सा का आयुर्वेदिक तथा एलोपैथिक चिकित्सालय है । पैथालाजी जांच पड़ताल का पूरा प्रबंध निष्णात चिकित्सकों की देख-रेख में चलता रहता है ।

बच्चों का हाईस्कूल तक मान्यता प्राप्त गुरुकुल है । महिला शिक्षा की समग्र व्यवस्था है । नित्य उपासना तथा स्वाध्याय सत्संग की समुचित व्यवस्था है । सबके लिए खुला भोजनालय भी है । शान्ति कुञ्ज का अपना निजी प्रकाशन का एक छोटा प्रेस भी है ।

ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान शान्ति कुञ्ज के समीप ही दूसरा आश्रम है जिसमें अध्यात्म और विज्ञान की संगति मिलाने का कार्य, अन्वेषण, परीक्षण की शैली पर चलता है । जड़ी-बूटी उपचार, साधना विज्ञान एवं अग्निहोत्र के सम्बन्ध में विशेष रूप से शोध चल रही है । एम० डी०, एम० एस० स्तर के शोधकर्ता और पोस्ट ग्रेजुएट स्तर के अन्य कार्यकर्ता इस संस्थान में निरन्तर कार्यरत रहते हैं । इसके प्रयासों से बुद्धिजीवी सम्प्रदाय का बड़ा समाधान होता है । इसकी साधन सम्पन्न प्रयोग शाला देखने ही योग्य है । इस विषय का एक विशाल पुस्तकालय भी है जो अपने ढंग का अनोखा है ।

युगान्तर चेतना प्रेस, शान्ति कुञ्ज, हरिद्वार ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org